राजेश कुमार यादव

मां से मिलने गांव में,जाते नहीं जनाब
मगर शहर में बैठकर, मां पर लिखी किताब

निर्धन के दालान में, कच्ची कलियां देख
काजी लेकर घूमते, बूढ़े बूढ़े शेख

नेताओं ने कर दिया, सारा सिस्टम फेल
थाने तो हैं टाट के, पांच सितारा जेल

पुण्य कमाने सेठजी, जाओ मत हरिद्वार
नौकर को दे दीजिए, जितनी बने पगार

सीता चौदह साल तक, रही राम के पास
भोग रही थी उर्मिला, लखन बिना वनवास

सोच समझकर कीजिए, लड़कों से अनुराग
चोंच मारकर दूध में, उड़ जाते हैं काग

हम तो पंछी पालते, छत पर चुग्गा डाल
अब्दुल्ला ने चौक में, बिछा रखा है जाल

मां देती जब रोटियां, सब करते गुणगान
अन्न उगाया बाप ने, नहीं किसी को ध्यान

टुकुर टुकुर जो देखते, सब्जी रोटी दाल
इन बच्चों के बाप का, नाम मिठाईलाल

मंहगाई से तंग है, भाई परमानंद
लेकिन दारू की जगह, दूध किया है बंद

रीडर मंगतू राम था, जज था लक्ष्मी दास
सच्चाई की कोर्ट में, लगी फूलने सांस

तीन साल में दे दिए, जिसने तीन तलाक
उसको बीबी चाहिए, चौथी बिल्कुल पाक

श्वेत वसन को हो गया, श्वेत वसन से प्यार
जीना विधवा का किया, नेता ने दुश्वार

सब्जी मंडी में घुसा, दे मूंछों पर ताव
चक्कर खाकर गिर गया, बस पूछे थे भाव

पानी की एक बूंद भी, मत करना बर्बाद
बच्चों को ये सीख दो, पर होली के बाद

दारू दप्पड बांटकर थोड़ा किया प्रपंच
दो कौड़ी का आदमी, बन बैठा सरपंच

लाला अच्छी बात है, बांट भेड़ को शाल
लेकिन ये भी तो बता, किसकी खींची खाल

बूढ़ी काकी ने जने, दोनों लाल कमाल
इक देता है रोटियां, दूजा देता दाल